B-II
L-27
Ancient
history

---- वाणिज्य एवं व्यापार

⇓

- मथुरा साटक प्रकार के कपड़े का केन्द्र था
- यूनानी साक्ष्य एवं जातकों से यह प्रमाण मिलता है कि व्यवसाय सामान्यत: आनुवांशिक होता था।
- विदिशा हाथी दांत के शिल्पकारों द्वारा दान देने का उल्लेख सांची स्तूप के तोरण द्वार पर प्राप्त होता है।
- इस समय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग कताई और बुनाई था। उरैयूर व अरिकामेडु सूती वस्त्र के प्रमुख केन्द्र थे।
- श्रेणियां कभी-कभी महाजन का भी कार्य करती थी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES

⇒ समाज एवं धर्म

- मौर्योत्तर काल में अधिकांश शिल्पी शूद्र वर्ण में आते थे किन्तु उनके धन एवं प्रतिष्ठा में अब वृद्धि हो गई थी।
- विदेशी आक्रमणकारियों को निम्न क्षत्रिय या व्रात्य क्षत्रिय की श्रेणी में रखा गया।
- 60 वर्ण संकरों का उल्लेख मिलता है।
- भक्ति की भावना के बीज का उदय इस काल में विशेष रूप से हुआ।

⇒ मौर्योत्तर काल में कला

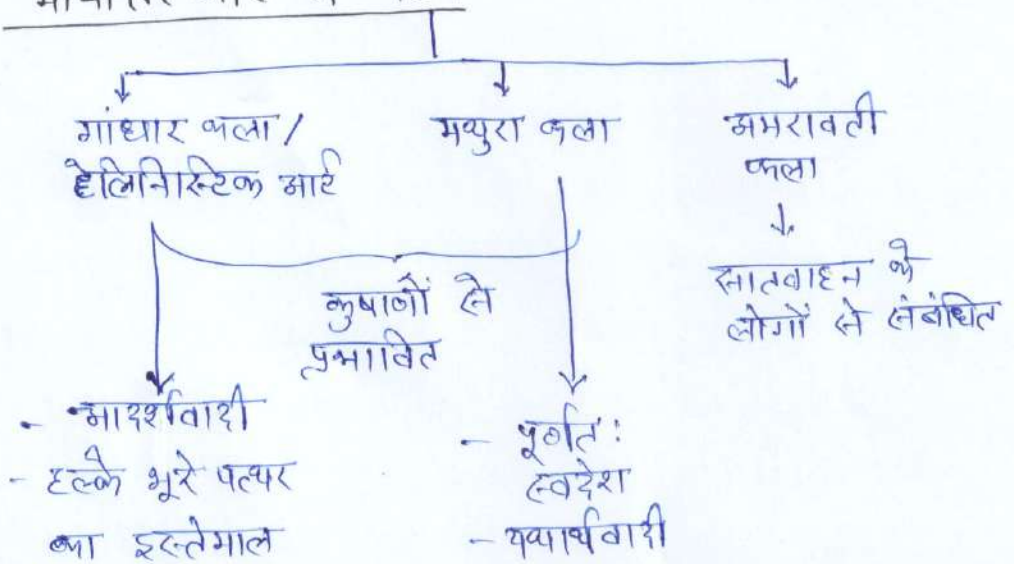

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ गुप्त काल

मौर्य काल का पतन → काफी लंबे समय तक भारत एक शासन सूत्र में न रह सका → यद्यपि मौर्योत्तर काल में कुषाण एवं सातवाहनों ने कुछ सीमा तक प्रयास किया किंतु वे उत्तर एवं दक्षिण तक ही सीमित रहे

ऐसे समय में देश के तीन भागों से 3 शक्तियों का उदय होता है।

- मध्य भारत के पश्चिम में ⇓ नाग शक्ति
- दक्कन में ↓ वाकाटक
- पूर्व में ↓ गुप्त ↓ क्षेत्र
  - बिहार
  - उत्तर प्रदेश ↓ संभवतः UP इसके लिये अधिक महत्व का था - क्योंकि अधिकतर सिक्के यहीं से मिले हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

→ गुप्त काल की
जानकारी का
स्रोत → चन्द्रगुप्त-II की पुत्री प्रभावती गुप्त का पूना का ताम्रपत्र
→ समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति (हरिषेण द्वारा रचित)
→ कुमारगुप्त का बिलसड़ अभिलेख
- स्कन्दगुप्त का भीतरी अभिलेख

- इनका गोत्र — धारण गोत्र
- आदिपुरुष → श्रीगुप्त
- उत्तराधिकारी → घटोत्कच
- गुप्त वंशावली के आधार पर प्रथम शासक चन्द्रगुप्त-I था — उपाधि → महाराजाधिराज (319-355 ई)
⇓
- गुप्त संवत (319 AD) चलाया
- शक संवत व गुप्त संवत के मध्य 241 वर्षों का अन्तर है।
↳ गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है
↳ विवाह → लिच्छवी राजकुमारी → कुमारदेवी से
↳ सर्वप्रथम चाँदी (रजत) के सिक्कों का प्रचलन करवाया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

⇒ समुद्र गुप्त (335-375) ई.

↳ कवि → कविराज ← उपाधि

↳ संगीतज्ञ → वीणा बजाते हुए सिक्कों पर अंकित

↳ अश्वमेध यज्ञ किया। इसके बाद अश्वमेध वाले सिक्के जारी किया।

↳ विजयों का वर्णन → दरबारी कवि हरिषेण ने प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख में किया है।

↓

3 प्रकार की विधियां युद्ध के लिए

- ग्रहण
- मोक्ष } दक्षिण के शासकों के लिए
- अनुग्रह }

↳ उत्तर भारत के 9 शासकों को पराजित किया

↳ कुछ अन्य विधियां
- आत्मनिवेदन → दरबार में प्रस्तुत होना
- कन्योपयन → विवाह करना
- गरुत्मंटक → मुक्ति (विषय) पर शासन का अनुरोध

↳ इनको भारत का नेपोलियन कहा जाता है (विन्सेन्ट स्मिथ)

↳ सिक्कों पर पराक्रमांक, व्याघ्र व अप्रतिरथ जैसे विषय समुद्र गुप्त के गौरव का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

↳ बौद्ध भिक्षु वसुबंधु को संरक्षण प्रदान किया था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ चन्द्रगुप्त-II (विक्रमादित्य) (380-412 AD)

स्रोत - देवीचन्द्रगुप्तम (विशाखदत्त)

उपाधि - देवगुप्त, देवश्री, देवराज, विक्रमांक, विक्रमादित्य, परमभागवत

↳ इन्होंने शक शासक रुद्रसिंह-III को पराजित कर शक शासन को समाप्त किया और इस अवसर पर चांदी के सिक्के (व्याघ्र सिक्के) जारी किया।

↳ इनके कार्यकाल में फाहयान आया था

↳ राजधानी → पाटलिपुत्र एवं उज्जैयनी

विद्या के प्रमुख केन्द्र भी थे

- चन्द्रगुप्त-II की विजयों का उल्लेख उदयगिरी गुहा लेख से मिलता है।

- दरबार में नौरत्न रहते थे।

कालिदास
धनवन्तरी → चिकित्सक
क्षपणक
अमरसिंह
शंकु
वेताल
घटकर्पर
वाराहमिहिर
वररुचि

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

⇒ कुमार गुप्त (महेन्द्रादित्य) (415 – 454) ई.

↓

स्रोत – बिलसड अभिलेख
- चांदी के सिक्के (तिथि अंकित है)
- मन्दसौर अभिलेख (प्रशस्ति)
↓
लेखक – वत्सभट्टि

→ अश्वमेध यज्ञ किया

→ नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना

→ उपाधि – महेन्द्रादित्य, श्री महेन्द्र, अश्वमेध महेन्द्र

→ कुमार गुप्त के अन्तिम दिनों में पुष्यमित्र का आक्रमण हुआ और कुमार गुप्त ने इससे निपटने के लिए स्कन्दगुप्त को भेजा था और अन्ततः पुष्यमित्र को पराजय का सामना करना पड़ा
(स्रोत – स्कन्दगुप्त का भीतरी अभिलेख)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

⇒ स्कन्द गुप्त (455 - 467 ई.)

- सत्ता संभालते ही हूणों का आक्रमण → जूनागढ़ अभिलेख
↓
हूणों की पराजय

- जूनागढ़ अभिलेख सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण की पुष्टि करता है।
↳ गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित ने करवाया

- उपाधि - शक्रादित्य
- चीन में दूत भेजा था

⇒ हूणों का आक्रमण

स्कंदगुप्त → गुप्त शासन के पतन का महत्वपूर्ण कारण

नेता → तोरमाण, जिसने आक्रमण किया

स्रोत → धन्यविष्णु का एरण अभिलेख

→ तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल का आक्रमण होता है।

↳ स्रोत → ह्वेनसांग का वर्णन

→ ग्वालियर प्रशस्ति

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

→ अंतिम शासक (गुप्त वंश)
⇓
कुमारगुप्त - III

⇒ गुप्त वंश का प्रशासन

→ प्रशासन को गरुड़मंडल की संज्ञा दी गयी है
→ मौर्यों के विपरीत गुप्त शासकों ने महाराजाधिराज जैसी उपाधियां धारण की।
→ राजतंत्र वंशानुगत था परन्तु ज्येष्ठाधिकार की परंपरा सीमित थी
→ मौर्यकाल में जो केन्द्रीयकरण देखने को मिलता है वह गुप्तकाल में नहीं मिलता है, अर्थात विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया बढ़ने लगी थी।

→ गुप्तकाल के सबसे बड़े अधिकारी → कुमारामात्य

↳ इन्हें इनके ही प्रांत में नियुक्त किया जाता था। और शायद वे नगद वेतन पाते थे।

अधिकारी

→ महाबलाधिकृत – सेना नायक

→ महादण्डनायक → न्यायाधीश

→ सन्धिविग्राहक

→ विनयस्थिति संस्थापक – शिक्षाधिकारी

– महापक्षपटलिक – लेखा का अधिकारी

- युक्त पुरुष – युद्ध के दौरान लेखा-जोखा रखने वाला

↳ सम्राट द्वारा स्वंय शासित → स्थान → देश
↓
प्रशासक → गोप्ता

↳ प्रशासनिक इकाई → भुक्ति
↓
प्रांत की तरह

⇒ प्रांतीय प्रशासन

राज्य ⇄ प्रांत
↓
(भुक्ति / प्रदेश / भोग)
||
अधिकारी → गोप्ता / भोगपति / उपरिक

जिले → विषय
↳ अधिकारी → विषयपति

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- विषयपति को सलाह देने के लिए परिषद
↓
- सार्थवाह
- श्रेष्ठिन
— कायस्थ

⇒ स्थानीय प्रशासन

1. नगर प्रशासन ⟶ नगरपति / पुरपाल

2. ग्राम प्रशासन ⟶ ग्रामपति

ग्राम → सबसे छोटी इकाई
↳ अधिकारी - महत्तर / ग्रामपति

*
राज्य
↓
प्रान्त
↓
विषय
↓ → पेठ (ग्राम समूह)
ग्राम

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ सेना

→ राजा के पास स्थायी सेना

→ चार अंग → पदाति, रथारोही, अश्वारोही, गजसेना

सबसे छोटी टुकड़ी (पदाति) ↓ चमूप

गजसेना ↓ नायक ↓ कटक

↳ साधारण सैनिक → चाट / भाट